उमाशंकर जोशी

कवि परिचय :– गुजराती कविता के सशक्त कवि उमाशंकर जोशी का जन्म 1911 ई० में गुजरात में हुआ । आपने गुजराती साहित्य को नए आयाम दिये । आप को गुजराती परंपरा का गहरा ज्ञान था । आपने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा । आम आदमी के अनुभव से परिचय कराया और नयी शैली दी । आप ने भारत की आजादी की लडाई में भी भाग लिया और जेल भी गए । आप का देहावसान 1988 में हुआ ।

छोटा मेरा खेत

पाठ सार :– कवि को कागज़ का पन्ना एक खेत की तरह लगता है । जैसे कोई बीज अंधड़ के साथ उड़कर आता है, खेत में गिरता है, बीज़ खाद, पानी मिट्टी में मिलकर अंकुरित होता है । बीज़ पौधा या वृक्ष बनता है, उस पर फल आते है और फलों का आनन्द सारा संसार लेता है । ठीक इसी प्रकार कवि के मन में भावों का अंधड़ चलता है तथा कवि किसी एक विषय पर कविता बनाने की सोचता है । उन भावों मे कवि की कल्पनाएँ मिलती हैं और कविता अपना रूप लेने लगती है । एक दिन ये कविता पूर्ण विकसित हो जाती है तथा युग युगान्तर तक आनन्द देती है ।

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया ।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया निःशेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव–पुष्पों से नमित हुआ विशेष ।

शब्दार्थ :– चौकोना = चार कोनों वाला, अंधड़ = आँधी, क्षण = पल, निःशेष = पूरी तरह, नमित = झुका हुआ, विशेष = विशेष रूप से

व्याख्या :– छोटे से खेत में जब अंधड़ के साथ कोई बीज आ कर गिरता है तब खाद, पानी, मिट्टी से मिल कर वो बीज अंकुरित होता है । बीज पौधा बनता है । उस पर पत्ते, फूल, फल आते हैं वह फलों से लद कर झुक जाता है । ठीक उसी प्रकार चौकौर कागज का पन्ना भी खेत की तरह है । कवि के मन में विचारों का अंधड़ आता है तथा एक विचार बीज की तरह हैं । उस विचार में कल्पनाओं के रसायन मिलने लगते हैं तथा कवि का अहं समाप्त हो जाता है तथा शब्दों के अंकुर फूटने लगते हैं । धीरे धीरे एक सम्पूर्ण कविता बन जाती है ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. दृश्य बिंब
4. सांग रूपक अलंकार
5. पल्लव पुष्प, गल गया अनुप्रास अलंकार
6. प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग

झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती ।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना ।

शब्दार्थ :– अलौकिक = अद्भुत, रोपाई = पौधा खेत में लगाना, अनंतता = सदा के लिए, अक्षय = कभी न नष्ट होने वाला

व्याख्या :– कवि कहते हैं जैसे वृक्ष पर फल आते हैं वो फल अद्भुत आनन्द देने वाले होते हैं । जितना फलों का उपयोग करो, वृक्ष उतने अधिक फल देते हैं और वो फल बहुत समय तक हमें आनन्दित करते हैं।

ठीक उसी प्रकार जब कविता पूर्ण विकसित हो जाती है तो वह अद्भुत आनन्द देने लगती है। एक पल के भावों ने कविता का रूप लिया था वह कविता कभी न नष्ट होने वाला आनन्द देने लगती है । इस आनन्द को जितना लुटाओ ये कभी नष्ट नहीं होता, बल्कि युग युगान्तर तक रहता है।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. दृश्य बिंब
4. सांग रूपक अलंकार
5. प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग

VASUNDHARAHINDI.COM

बगुलों के पंख

पाठ सार :– आकाश में काले बादल हैं तथा संध्या काल की श्वेत आभा भी आकाश में फैली है । सफेद बगुले पंक्ति बना कर उड़े चले जा रहे हैं । ये दृश्य बहुत सुन्दर है । कवि कहते हैं – काश ! ये दृश्य कुछ पल के लिए रूक जाये ।

नभ में पाँती–बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें ।
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया ।
हौले हौले जाती मुझे बाँध निज माया से ।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो ।
वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखें
नभ में पाँती–बँधी बगुलों की पाँखें ।

शब्दार्थ :– नभ = आकाश, पाँती = पंक्ति, कजरारे = काले, साँझ = संध्या, सतेज = उज्ज्वल, निज = अपनी, माया = जादू, तनिक = थोड़ा, पांखें = पंख

व्याख्या :– आकाश में पंक्ति बाँध कर सफेद बगुले उड़े जा रहे हैं । आकाश में काले बादल छाये हैं तथा संध्या काल का उज्ज्वल प्रकाश भी छाया है । सफेद बगुले धीरे–धीरे उड़े चले जा रहे हैं । ये दृश्य बहुत सुन्दर है तथा इस दृश्य का जादू धीरे–धीरे मुझे अपने मोह में बाँध रहा है । कवि कहते हैं कोई इस दृश्य को थोड़ी देर के लिए रोक लो ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. दृश्य बिंब
4. हौले–हौले – पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार
5. आँखें चुराना मुहावरा है ।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है ?
उत्तर :– कवि कहते हैं जैसे खेत मे एक बीज बोया जाता है वो बीज अंकुरित हो कर वृक्ष का रूप लेता है । वृक्ष पर पत्ते, फूल, फल आते हैं तथा वो फल बहुत समय तक लोगों को आनन्दित करते हैं ।

ठीक उसी प्रकार कवि के मन मे विचारों का अंधड़ आता है तथा एक विचार में कल्पनाओं व भाषा के रसायन मिलने लगते हैं तथा शब्दों के रूप में कागज पर कविता का रूप लेने लगते हैं । जब ये कविता पूर्ण विकसित हो जाती है तो ये अद्‌भुत आनन्द देने लगती है, अर्थात् एक पल के विचार ने कविता का रूप लेकर अनन्त काल तक साहित्य प्रेमियों को आनन्दित किया ।

प्रश्न 2. रचना के संदर्भ मे अंधड़ व बीज क्या हैं ?
उत्तर :– अंधड़ – विचारों की आँधी का प्रतीक है तथा बीज – विचार कि अभिव्यक्ति है ।

अर्थात कवि के मन में विचारो की आँधी आती है तथा एक विचार अभिव्यक्ति का रूप लेता है और कविता के रूप मे विकसित होने लगता है ।

प्रश्न 3. रस का अक्षय पात्र से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया हैं ?
उत्तर :– अक्षय का अर्थ है कभी न क्षय होना, खत्म होना । जब एक कविता विकसित होती है तब वह रस का अक्षयपात्र बन जाती है क्योंकि वह कविता युग युगान्तर तक आनन्द देने वाली बन जाती है । उस कविता का आनन्द जितना लूटा जाता है, वह कम नहीं होता, बल्कि बढ़ता जाता है तथा चिरकाल तक आनन्द देता है ।

प्रश्न 4. 'बीज गल गया निःशेष' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?
उत्तर :– निःशेष का अर्थ है पूर्ण रूप से । कवि कहते हैं खाद, पानी, मिट्‌टी से मिल कर बीज पूर्ण रूप से गल जाता है तथा अंकुरित हो कर वृक्ष के रूप में विकसित हो जाता है ।

ठीक उसी प्रकार कवि के विचार कल्पनाओं व भाषा के साथ मिलकर एक हो जाते हैं, कवि का अहँ भाव समाप्त हो जाता है तथा ऐसे में शब्दों के रूप में जो कविता विकसित होती है, वह सर्व साधारण के लिए होती है ।

प्रश्न 5. रोपाई क्षण की
कटाई अनंतता की
का आशय स्पष्ट कीजिए ।
उत्तर :– कविता का मूल भाव या विचार एक पल भर में जन्म लेता है तथा उस मूल भाव में कल्पनाएँ व भाषा मिल कर शब्दों के रूप में अभिव्यक्त होने लगते हैं तथा कविता का रूप ले लेते हैं। उस कविता का आनन्द केवल वर्तमान काल के लोग ही नहीं, आने वाले समय में भी लोग उस कविता का आनन्द लेते हैं अर्थात् कविता अनंत काल तक आनन्द देती है।

* * * * *